ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

‘गुरू द्रोण का अन्तर्निरीक्षण’ में मिथकीय विनियोग

चौहान हर्षदभाई जे.

पीएच.डी शोध छात्र, भाषा साहित्य भवन, गुजरात यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

पौराणिक कथा पर आधारित प्रस्तुत गीतिनाट्य गुरू द्रोण के जीवन से सम्बन्धित है। उदयशंकर भट्ट ने इसमें गुरू द्रोण का अन्तर्निरीक्षण दिखाया हैं। गुरू द्रोण भी अपने द्वारा किये गये कार्यों पर पछताते हैं और अपने आप को दोषी ठहराते हैं। यहाँ पर गीतिनाट्यकार ने एक गुरू का अन्तर्निरीक्षण दिखाया हैं कि किस तरह वह अपना निरीक्षण करते हैं। कवि ने गुरूद्रोण के अन्तर्मन का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया हैं।

गुरू द्रोण कौरवों के सेनापति थे। द्रोण शरीर से कौरवों के साथ हैं तो मन से पाण्डवों की विजय चाहते हैं। द्रोण को दुर्योधन के अनेक कटुवचनों को सहना पड़ा। दुर्योधन के कटुवचन सुनकर द्रोण केमन में अंतर्द्वन्द उत्पन्न होता हैं।अपने पाप के बारे में सोचकर वे स्वयं व्याकुल हो जाते हैं। द्रोण युद्ध को विनाशकारी मानते हैं। द्रोण ने गीतिनाट्य द्वारा युद्ध के विरुद्ध आवाज उठाई हैं। वर्तमान युग में भी युद्ध की समस्या मौजूद हैं।

द्रोण ने अपने जीवन में अनेक अन्याय किये।द्रोण ने निषाद पुत्र एकलव्य को शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं किया। लेकिन एकलव्य नें गुरूभक्ति से निष्ठा और एकाग्रता से द्रोण की मूर्ति को सामने रखकर धनुर्विद्या सीखी। इस प्रकार गुरू के प्रति असीम भक्ति रखनेवाले शिष्य वर्तमान समय में भी मौजूद हैं। द्रोण ने गुरू दक्षिणा के रूप में अंगूठा मांगकर अमानवीय आचरण किया। गुरू के मन में शिष्यों के प्रति पक्षपात होना पाप हैं। द्रोण चाहते हैं कि अर्जुन श्रेष्ठ धनुर्धर बनें। इसलिए उन्होंने एकलव्य से अंगूठा मांग लिया। वर्तमान समय में भी ऐसे गुरू मौजूद हैं। द्रोण अपने कर्म को पाप नहीं मानते। वे कहते हैं कि-

“तुम नहीं जानते हों, वह काल ऐसा ही था,
नीचों को शस्त्रज्ञान का न अधिकार हैं।”(1)

गुरूओं को शिष्यों में उंच-नीच का भेदभाव नही रखना चाहिए।सभी शिष्यों को समान मानना चाहिए। द्रोण भरी सभा में द्रोपदी पर होते अत्याचार देखते रहें पर कुछ नहीं बोलते।अपने इन अन्यायों के बारे में सोचकर द्रोण दुखी हैं। द्रोण अपने आप को पापी, स्वार्थी और हीन मानने लगते हैं। गुरू द्रोण को अपने किये गये कार्यों पर पश्चाताप होता हैं। गीतिनाट्यकार नें पश्चाताप की महिमा का वर्णन गुरू द्रोण के द्वारा किया हैं। पश्चाताप मानव के अहम को दूर करता हैं। वर्तमान समय में भी मानव कई अन्याय करता हैं। फिर अन्याय के बारे में सोचकर वह अत्यन्त व्याकुल हो जाते हैं। द्रोण छाया से कहते हैं-

“होकर आचार्य भी अनाचार ग्रहण किया,
योग्य औ’ अयोग्य में विवेक नहींकर सका।
अर्थ के लिए जिया, प्रतिष्ठा को माना सब,
निष्ठा के भ्रम में अधर्म ही कमाया था।”(2)

पष्चाताप करने से व्यक्ति का मन पवित्र हो जाता हैं। उसके मन का अंधकार दूर होता हैं। यहाँ पर गीतिनाट्यकार बताना चाहते हैं कि जिस व्यक्ति का विवेक खो जाता हैं, उसका समाज में ह्रास होता हैं। द्रोण ने आचार्य होने पर भी अनाचार ग्रहण किया। योग्य और अयोग्य को पहचानने का विवेक वह नही कर सके। उन्होंने प्रतिष्ठा को ही महत्त्व दिया। द्रोणाचार्य नें अपने शिष्य के प्रति अन्यायपूर्ण और अमानवीय आचरण किया। इस प्रकार गीतिनाट्यकार नें एक गुरू का अन्तर्निरीक्षण दिखाया हैं।

संदर्भः

1. उदयशंकर भट्ट(1954)अशोक-वन बन्दिनी और तीन गीतिनाटक भारतीय साहित्य मंदिर,दिल्ली,पृष्ठ-99
2. वहीं, पृष्ठ-106

RRIJM 2015, All Rights Reserved